दिऊबन्दी तालीम व तहज़ीब

दिऊबन्दी अक़ाइद

खुद उन की किताबों से

(नाशिर)

नूरी दारुलइफ्ता मदीना मस्जिद मोहल्ला अलली खान काशीपूर

अंजुमन मसलके आलाहजरत मोहल्ला अलली खान काशीपूर

टी टी एस कमेटी मुहल्ला कटोरा ताल काशीपूर

जमाअते रज़ाए मुस्तफा विजे नगर काशीपूर

अंजुमन गूलामाने ताजुश्शरियह मुहल्ला खालसा

एक भी हवाला गालत साबित करने वाले को एक लाख रोपिए का नकद इनाम

दिऊबन्दी अक़ाइद

जिस का नाम मुहम्मद या अली है उस को किसी बात का इख्तियार नहीं

"सब कामों के मुख्तार का नाम अल्लाह है और जिस का नाम मुहम्मद या अली है उस को किसी बात का इख्तियार नहीं ,, < तक़्वीयतुलिमन\सफ़हा 56>

अल्लाह चाहे तो करोड़ों नबी,वली,फिरिश्ते,जिबराईल,और मुहम्मद सल्लालहु अलैहिवसल्लम के बराबर एक आन मे पैदा करदे

"उस श्हनशाह(खुदावन्दे कुद्दूस)की तो यह शान है कि अगर चाहे तो लफ्जे कुन से करोड़ों नबी,वली,फिरिश्ते,जिबराईल,और मुहम्मद सल्लालहु अलैहिवसल्लम के बराबर एक आन मे पैदा करदे- < तक़्वीयतुलिमन\सफ़हा 43>

अम्बिया और औलिया अल्लाह के सामने एक जर्रे से भी कमतर

"खुदा कि शान बहुत बड़ी है तमाम अम्बिया और औलिया उस के सामने एक जर्रे से भी कमतर हैं,,< तक़्वीयतुलिमन\सफ़हा 72>

नबी सल्लालहु अलैहिवसल्लम के दहशत के मारे होश उड़ गए

"सुबहानल्लाह तमाम इन्सानों में सब से अफजल इंसान महबूबे खुदा अहमदे मुजतबा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लालहु अलैहिवसल्लम की तो यह हालत है के एक गंवार के मुंह से एक नामाकूल बात निकल गयी तो आप के दहशत के मारे होश उड़ गए-< तक़्वीयतुलिमन\सफ़हा 72>

रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता

"दुन्या का सारा कारोबार अल्लाह के चाहने से होता है रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता-< तक़्वीयतुलिमन\सफ़हा 75>

अंबिया औलिया सब बे बस बनदे और बड़े भाई की तरह हैं

"जितने अल्लाह के मुकर्रब बनदे हैं खाह अंबिया हों या औलिया हों वुह सब अल्लाह के बे बस बनदे हैं और हमारे भाई हैं मगर हक़ तआला ने उन्हें खुदा बड़ाई बख्शी तो हमारे बड़े भाई की तरह हुये,,< तक़्वीयतुलिमन\सफ़हा 77>

नबी दूसरों को भलाई बुराई नहीं पहुंचासकते

"मेरी कुदरत का यहाँ से अंदाज़ा लगाओ के मैं अपनी जान तक के लिये नफ व नुकसान का मालिक नहीं दूसरों को तो किया भलाई बुराई पहुंचासकूंगा,,
तक़्वीयतुलिमन\सफ़हा 38>

बड़े से बड़ा इनसान हो या मुकर्रब तरीन फिरिश्ता अल्लाह की शान के मुक़ाबले पर एक चमार कि हैसियत से भी जियादह जलील है

"यकीन मानो के हर शखस खाह वुह बड़े से बड़ा इनसान हो या मुकर्रब तरीन फिरिश्ता उस कि हैसियत शाने उलोहियत के मुक़ाबले पर एक चमार कि हैसियत से भी जियादह जलील है,,< तक़्वीयतुलिमन\सफ़हा 27>

किसी को राह पर ले आना नबी के बस की भी बात नहीं

"किसी को राह पर ले आना नबी के बस की भी बात नही,,
(हैडिंग)<नसीहतुलमुस्लिमीन॥453>

नबी को जैसा इल्म है ऐसा इल्म पागलों जानवरों को भी हासिल है

"फिर यह कि आप की जाते मुक़ददसा पर इल्मे गैब का हुक्म किया जाना अगर बक़ौले ज़ैद सही हो तो दरयाफ्त तलब अमर यह है कि इस गैब से मुराद बाज़ गैब है या कुल गैब अगर बाज़ उलूमे गैबिया मुराद हैं तो इस मे हुजूर कि किया तखसीस है ऐसा इल्मे गैब तो ज़ैद,व अमर, बलके हर सबी व मजनून बलके जमी हैवानात व बहाइम के लिए भी हासिल है ,,
<हिफ़्जुलईमान-मत्बोआ बिलाली सैटम प्रेस सधोरा ज़िला अंबाला ।सफ़हा 6॥कुतुब खाना अशरफिया राशिद कमपनी देउबन्द सफ़हा 8>

नमाज़ में नबी की तरफ अपनी हिम्मत लगादेना गधे की सोरत में मुसतगरक होने से बुरा है

"शैख या उसी जैसे और बुजुरगों की तरफ खाह जनाब रिसालत मआब ही हों अपनी हिम्मत को लगा देना अपने बैल और गधे की सोरत में मुसतगरक होने से बुरा है,,
<सिराते मुसतकीम उर्दू , सफ़हा 148,दारुल किताब देउबन्द>

नबी की विलादत कनहया की विलादत की तरह

"अब हर रोज़ कौनसी विलादत मुकर्रर होती है पस यह हर रोज़ इआदहे विलादत का तो मिसल हुनूद के है के सांग कनहया की विलादत का हर साल करते है या मिसल रवाफ़िज़ के कि नक़ले शहादते अहले बैत हर साल बनाते हैं मआजल्लाह सांग आप की विलादत का ठहरा,,

<बराहीने कातिया,सफ़हा 318,, दारुल किताब देउबन्द।कुतुब खाना एजाजिया देउबन्द,सफ़हा 148>

नबी के लिए इल्म साबित करना शिरक शैतान का इल्म क़ुरान से साबित

" शैतान व मलकुल्मौत का हाल देखकर इल्मे मुहीत ज़मीन का फखरे आलम ﷺ को खिलाफे नुसूसे क़तइया के बिलादलील महज़ क़यासे फ़ासिदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है। शैतान और मलकुल्मौत को यह वुसअत नस से साबित हुई। फखरे आलम ﷺ की वुसअते इल्म कौन सी नस्से क़तई है कि जिससे तमाम नुसूस को रद्द करके एक शिर्क साबित करता ह,,

,<बराहीने कातिया,सफ़हा 122,, दारुल किताब देउबन्द।कुतुब खाना एजाजिया देउबन्द,सफ़हा >

नबी ने उर्दू देउबन्द से सीखी

" एक सालिह फखरे आलम अलैहिस्सलाम की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ हुए तो आप को उर्दू में कलाम करते देखकर पूछा कि आप को यह कलाम कहां से आ गई आप तो अरबी हैं। फरमाया कि जब से उलमाए मदरस ए देवबंद से हमारा मुआमला हुआ, हम को यह ज़ुबान आ गई,,

<बराहीने कातिया,सफ़हा 63।दारुल किताब देउबन्द।कुतुब खाना एजाजिया देउबन्द,सफ़हा >

नबी के बाद कोई नबी आए तो नबी के आखरी नबी होने मे कोई फरक़ नहीं आएगा

"इसी तरह अगर फर्ज़ कीजिए आप के जमाने में भी इस ज़मीन या आसमान में कोई नबी हो तो वुह भी इस वस्फे नुबुव्व्त में आप ही का मुहताज होगा....

इस के हाशिए मे है ...

अगर बिलफ़र्ज़ आप के जमाने मे या **बिलफ़र्ज़ आप के बाद भी कोई नबी फर्ज़ किया जाए तो भी खातमययते मुहम्मदिया में फर्क ना आऐगा** कियों कि फखरे आलम सल्लालहु अलैहिवसल्लम खातम फकत इस माना कर नहीं के आप सब से पिछ्ले जमाने के नबी हैं जैसा के अवाम का खयाल है बल्के जैसे आप खातमे जमानी हैं वैसे ही आप खातमे ज़ाती और खातमे रुतबी नबी थे,,

<तहजीरुन्नास,सफ़हा 21.22, दारुल किताब देउबन्द>

उम्मती अमल मे नबी से बढ़ जाता है

"अंबिया अपनी उम्मत से मुमताज़ होते हैं तो उलूम ही मे मुमताज़ होते हैं बाक़ी रहा अमल उस मे बसा औकात बजाहिर उम्मती मसावी होजाते हैं बल्के बढ़ जाते हैं,,

,<तहजीरुन्नास,सफ़हा 8, दारुल किताब देउबन्द>

थानवी साहिब का कलमा और उन पर दुरूद

"और सो गया कुछ अरसे के बाद ख़्वाब देखता हूँ कि कलिमा शरीफ ला इलाहा इल्लल्लाह

मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ता हूँ **लेकिन मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह की जगह हुज़ूर का नाम लेता हूँ** इतने में दिल के अंदर ख्य़ाल पैदा हुआ कि तुझ से गलती हुई कलिमा शरीफ के पढ़ने में इस को सही पढ़ना चाहिए इस ख़्याल से दोबारा **कलिमा शरीफ पढ़ता हूँ दिल पर तो यह है कि सही पढ़ा जावे लेकिन ज़ुबान से बेसाख्ता बजाए रसूलुल्लाह सल्लालहु अलैहिवसल्लम**

के नाम के अशरफ अली निकल जाता है हालांकि मुझ को इस बात का इल्म है कि इस तरह दुरुस्त नहीं लेकिन बेइख़्तियार ज़ुबान से यही कलिमा निकलता है। दो तीन बार जब यही सूरत हुई तो हुज़ूर को अपने सामने देखता हूँ और भी चंद शख्स हुज़ूर के पास थे लेकिन इतने में मेरी यह हालत हो गई कि मैं खड़ा खड़ा बिवजह इसके कि रिक़्क़त तारी हो गई जमीन पर गिर गया और निहायत जोर के साथ चीख मारी और मुझ को मालूम होता था कि मेरे अंदर कोई ताक़त बाक़ी न रही इतने में बन्दा ख़्वाब से बेदार

हो गया लेकिन बदन में बदस्तूर बे हिसी थी और वह असर नाक़ती बदस्तूर था लेकिन हालते ख़्वाब और बेदारी में हुज़ूर का ही ख्याल था लेकिन हालते बेदारी में कलिमा शरीफ की गलती पर जब ख़्याल आया तो इस बात का इरादा हुआ कि इस ख्याल को दिल से दूर किया जावे इस वास्ते कि फिर कोई ऐसी गलती न हो जावे बई ख्याल बन्दा बैठ गया और फिर दूसरी करवट लेट कर कलिमा शरीफ की गलती के तदारुक में रसूलुल्लाह सल्लालहु अलैहिवसल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़ता हूँ लेकिन फिर भी यह कहता **हूँ अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यदना व नबीयना व मौलाना अशरफ अली।**

हालांकि अब बेदार हूँ ख़्वाब नहीं लेकिन बेइख़्तियार हूँ मजबूर हूं ज़ुबान अपने काबू में नहीं।

उस रोज़ ऐसा ही कुछ ख़्याल रहा तो दूसरे रोज़ बेदारी में रिक़्क़त रही खूब रोया और भी बहुत से वुजूहात जो हुजूर के साथ बाइसे महब्बत हैं कहां तक अर्ज़ करूं, (जवाब)इस वाकये में तसल्ली थी कि जिस की तरफ तुम रुजू करते हो वुह बिऔनिही तआला मुतत्बे सुन्नत है ,,<रिसाला अलइमदाद ,सफर 1336।सफ़हा 35।मतबा इमदादुल्मताबे थाना भवन >

<u>मौलाना क़ासिम नानौत्वी का मरने के बाद देउबन्द आना</u>

“एक दिन अलस्सुबह बादे नमाज़े फ़जर मौलाना रफीउद्दीन साहिब ने मौलाना महमूद हसन साहिब को अपने हुजरे मे बुलाया जो दारुलउलूम देउबन्द मे है मौलाना हाज़िर हुए और बंद हुजरे के किवाड़ खोल कर अंदर दाखिल हुए मौसम सख्त सर्दी का था मौलाना रफीउद्दीन साहिब ने फरमाया कि पहले ये मेरा रूई का लिबादा देख लो मौलाना ने लिबादा देखा तो तर था और खूब भीग रहा था फरमाया कि वाकिया यह है कि अभी अभी मौलाना नानौत्वी रहमतुल्लाह अलैह जसदे उनसुरी के साथ मेरे पास तशरीफ लाये थे जिस से मैं एक दम पसीना पसीना हो गया और मेरा लिबादा तर बतर होगया और यह फरमाया कि महमूद हसन को कह दो कि वुह इस झगड़े मे न पड़े पस मैं ने यह कहने के लिए बुलाया है”

<अरवाहे सलासा सफ़हा 261-कुतुब खाना नईमिया देउबन्द >

दिऊबन्दी तालीम व तहज़ीब

मौलाना मंसूर अली खान मुरादआबादी को लड़के से इश्क़

"मौलाना मंसूर आली खान साहिब मरहूम मुरादआबादी हज़रत नानौत्वी रहमतुल्लाह अलैह के तलामिजह मे से थे तबीयत के साथ इधर झुकते थे उनहों ने अपना वाकिया खुद भी मुझ से नक़ल फरमाया कि मुझे एक लड़के से इश्क़ हो गया और इस कदर उस कि महब्बत ने तबीयत पर गलबा पाया की रात दिन उसी के त्सव्वुर में गुजरने लगे मेरी अजीब हालत हो गयी तमाम कामों में इख्तिलाल हो गया हज़रत की फिरासत ने भाँप लिया लेकिन सुबहानल्लाह तरबियत व निगरानी इसे कहते हें कि निहायत बे तकल्लुफ़ी के साथ हज़रत ने मेरे साथ दोस्तना बरताओ शुरू किया और उसे इस कदर बढ़ाया कि जैसे दो यार आपस में बे तकल्लुफ दिल लगी किया करते हें यहाँ तक कि खुद ही उस महब्बत का ज़िक्र छेड़ा फरमाया कि हाँ भाई वुह (लड़का)तुम्हारे पास कभी आते भी हैं या नहीं ?मैं शर्म व हिजाब से चुप रह गया तो फ़रमाया कि नहीं भाई ये हालात तो इंसान ही पर आते हैं इसमें छुपाने की क्या बात है ग़रज़ इस तरीक़ से मुझसे गुफ़्तुगू की कि मेरी ही ज़बान से उस कि महब्बत का इक्रार करवा लिया और कोई ख़फगी और नाराज़गी नहीं ज़ाहिर की बल्कि दिलजोई फरमाई इस मखसूस बे तकल्लुफ़ी के आसार अब मुझ पर ज़ाहिर होने शुरू हुए मैं एक दिन तंग आगया और दिल मे सोचने लगा कि यह महब्बत मेरी रग व रेशा में सिरायत कर गयी मुझे तमाम उमूर से बेकार कर दिया किया करूं और कहाँ जाऊँ आखिर आजिज़ आकार दौड़ा हुआ हज़रत कि खिदमत में पहुंचा और मुअद्दब अर्ज़ किया हज़रत लिल्लाह मेरी इआनत फरमाइए मैं तंग आ गया हूँ और आजिज़ हो चुका हूं ऐसी दुआ फ़रमा दीजिए कि उस लड़के का ख्याल तक मेरे क़लब से महव हो जाए तो हंस कर फ़रमाया कि बस मौलवी साहब क्या थक गए बस जोश खत्म हो गया मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत मैं सारे कामों से बेकार हो गया निकम्मा हो गया अब मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हो सकता खुदा के लिए मेरी इमदाद फरमाइए फ़रमाया बहुत अच्छा बादे मगरिब जब मैं

नमाज़ से फारिग़ हों तो मौजूद रहें मैं नमाज़े मग़रिब पढ़कर छत्ते की मस्जिद में बैठा रहा जब हज़रत सलातुलअववाबीन से फारिग़ हुए तो आवाज़ दी मौलवी साहब मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत हाज़िर हूँ मैं सामने हाज़िर हुआ और बैठ गया फ़रमाया कि हाथ लाओ मैंने हाथ बढ़ाया मेरा हाथ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर रख कर मेरी हथेली को अपनी हथेली से इस तरह रगड़ा जैसे बान बटे जाते हैं खुदा की क़सम मैं अयानन देखा कि मैं अरश के नीचे हूँ और हर चहार तरफ से नूर और रौशनी ने मेरा इहाता कर लिया है गोया मैं दरबारे इलाही में हाज़िर हूँ,,
<अरवाहे सलासा सफ़हा 264, 265, 266, कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

हाफिज़ ज़ामिन कि तहज़ीब

"हाफिज़ साहिब को मछली के शिकार का बहुत शौक़ था एक बार नदी पर शिकार खेल रहे थे किसी ने कहा हज़रत हमें आप ने फरमाया **(अब के मारूं तेरी)**,,
<अरवाहे सलासा सफ़हा 225, कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

हाफिज़ बनना जनम रोग लगाना

"हज़रत हाफिज़ ज़ामिन साहिब से अगर कोई आकर कहता कि हज़रत मैं ने अपने लड़के को हिफ़्ज़ शुरू करा दिया है दुआ फ़रमादीजिए तो फरमाते अरे भाई कियों जनम रोग लगाया,,
<अरवाहे सलासा सफ़हा 223, कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

मौलाना नानौत्वी का दर्जा इंसानियत से बाला

"मौलाना रफीउद्दीन साहिब फरमाते थे कि मैं 25 बरस हज़रत मौलाना नानौत्वी कि खिदमत में हाजिर हुआ हूँ और कभी बिला वुजू नहीं गया मैं ने इंसानियत से बाला दर्जा उन का देखा है वुह एक फिरिश्तए मुक़र्रब था जो इन्सानों मे ज़ाहिर किया गया,,
<अरवाहे सलासा सफ़हा 259, कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

लोटे मखतून हैं

एक दफा छत्ते कि मस्जिद मे मौलाना फैजुल्हसन साहिब इस्तिन्जे के लिए लोटा तलाश कर रहे थे और इत्तिफ़ाक़ से सब लोटों कि टोंटियां टूटी हुई थीं फरमाने लगे

कि तो यह सारे लोटे मखतून ही हैं हज़रत (मौलाना नानौत्वी)ने हंस कर फरमाया फिर आप को तो बड़ा इस्तिन्जा नहीं करना है गोया मखतून से किया डर है,,
<अरवाहे सलासा सफ़हा 259,260। कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

जलसे मे मिठाई

"एक मर्तबा मौलाना क़ासिम साहिब के पास आप के खादिम मौलवी फाजिल हाज़िर थे मौलाना ने उन को मिठाई तक़सीम करने के वास्ते फरमाया कियों कि मौलाना का कोई जलसा मिठाई से खाली ना होता था अगर कहीं से आई हुई मौजूद न होती तो खुद मंगवाकर तक़सीम फरमाते,,
<अरवाहे सलासा सफ़हा 286, कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

बच्चों के कमर बंद खोल्ना

"मौलाना (क़ासिम नानौत्वी) बच्चों से हँसते बोलते भी थे और जलालुद्दीन साहिबज़ादे मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहिब से जो उस वक़्त बिल्कुल बच्चे थे बड़ी हंसी किया करते थे कभी टोपी उतारते कभी कमर बंद खोल देते थे ,,
<अरवाहे सलासा सफ़हा 287, कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

आलमे बेदारी मे सरकार का दीदार कराना

"दीवान मुहम्मद यासीन साहिब देउबन्दी ने फरमाया कि क़ाज़ीपूर मे जब हज़रत नानौत्वी तशरीफ़ ले गए हैं और अशरए मुर्हरम था और रवाफ़िज़ ने अपनी मजलिस मे आने कि हज़रत को दावत दी हज़रत ने फरमाया कि मंजूर है मगर इस शर्त से कि जब आप लोग मजलिस मे कह सुन चुकेंगे तो हम भी कुछ कहेंगे वुह इस पर आमादा नहीं हुए और वहीं कुछ मज़हबी गुफ़्तुगू करते हुए उन सब रवाफ़िज़ ने कहा कि अगर आप बेदारी में हम को हज़रत सल्लालहु अलैहिवसल्लम की ज़ियारत करा दें और हुज़ूर अपनी ज़बाने मुबारक से इरशाद फरमादें कि आप सच कह रहे हैं तो हम अहले सुन्नत वल्ज्माअत में दाखिल हो जाएंगे फरमाया कि तुम सब इस पर पुख्ता रहो तो मैं बेदारी में ज़ियारत कराने के लिए तय्यार हूँ मगर यह रवाफ़िज़ कुछ कच्चे हो गए,,
<अरवाहे सलासा सफ़हा 283.284, कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

पीर का अपने मुरीद को भरे मजमे में चित लिटाना

"एक दफ़ा गंगोह की ख़ानक़ाह में मजमा था। हज़रत गंगोही और हज़रत नानौतवी के मुरीद व शागिर्द सब जमा थे। और यह दोनों हज़रात भी वहीं मजमे में तशरीफ़ फरमा थे। कि हज़रत गंगोही ने हज़रत नानौतवी से महब्बत आमेज़ लहजे में फ़रमाया कि यहां ज़रा लेट जाओ। हज़रत नानौतवी कुछ शरमा से गए। मगर हज़रत ने फिर फ़रमाया तो बहुत अदब के साथ चित लेट गए। हज़रत भी उसी चारपाई पर लेट गए और मौलाना की तरफ करवट ले कर अपना हाथ उनके सीने पर रख दिया जैसे कोई आशिक़े सादिक़ अपने क़लब को तसकीन दिया करता है। मौलाना हर चंद फ़रमाते कि मियां क्या कर रहे हो ये लोग क्या कहेंगे। हज़रत ने फ़रमाया कि लोग कहेंगे कहने दो। "

<अरवाहे सलासा सफ़हा 307, हिकायत 305,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

हक़ तआला का वादा कि गंगोही साहिब की ज़बान से कभी गलत नही निकलवाएगा

"हज़रत (मौलवी अब्दुर्रशीद गंगोही साहिब)ने फरमाया कि हक़ तआला ने मुझ से वादा फरमाया है कि मेरी ज़बान से कभी गलत नही निकलवाएगा,,

<अरवाहे सलासा सफ़हा 310, हिकायत 308,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

नानौत्वी साहिब का खुद को इननमा अना क़ासिम वल्लाहु यूती कहना

"रास्ते मे जो कुछ भी मिलता वुह सब उन लोगों को दे देते और साथियों ने कहा हज़रत आप तो सभी दे देते हैं कुछ तो अपने पास रखये तू फरमाया इननमा आना क़ासिम वल्लाहु यूती- ,,

<अरवाहे सलासा सफ़हा 315, हिकायत 314,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

नबी का मौलाना कासिम साहिब से इजाज़त मांगना

"दीवान मोहम्मद यासीन साहब देवबंदी हज़रत मौलाना मोहम्मद कासिम नानौतवी के खुद्दाम में से थे।फ़रमाते थे कि एक दफ़ा मैं छत्ते की मस्जिद के शिमाली गुंबद के नीचे जिक्रे जहर में मसरूफ़ था।

कि हज़रत मौलाना कासिम नानौतवी मस्जिद के सहन में उसी शिमाली जानिब मुराक़िब और मुतवज़्जिह थे और तवज्जुह का रुख मेरे ही क़लब की तरफ था। इसी इसना मे मुझ पर एक हालत तारी हुई और मैं ने बहालते ज़िक्र देखा कि मस्जिद की चारदीवारी तो मौजूद है लेकिन छत और गुंबद कुछ नहीं, बल्कि एक अज़ीमुश्शान रौशनी और नूर है जो आस्मान तक फ़ज़ा में फैला हुआ है। यकायक मैंने देखा कि आसमान से एक तख़त उतर रहा है और उस पर जनाब रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ फ़रमा हैं और खुलफ़ा ए अरबआ हर चहार गोलों पर मौजूद हैं। वह तख़त उतरते उतरते बिल्कुल मेरे करीब आकर मस्जिद में ठहर गया और आँहज़रत सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुलफ़ा ए अरबआ में से एक से फरमाया: "भाई! ज़रा मौलाना मुहम्मद क़ासिम को बुला लो। " वह तशरीफ़ ले गए और मौलाना को लेकर आ गए। आँहज़रत सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया, "मौलाना! मदरसा का हिसाब लाइए । "अर्ज़ किया, हज़रत हाज़िर है और यह कहकर हिसाब बतलाना शुरू कर दिया और एक एक पाई का हिसाब दिया। हज़रत सल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुशी और मसर्रत की उस वक़्त कोई इंतिहा ना थी बहुत ही खुश हुए और फ़रमाया कि अच्छा मौलाना अब इजाज़त है मौलाना ने अर्ज़ किया, जो मरजिए मुबारक हो। उस के बाद वह तख़त आसमान की तरफ़ उरूज करता हुआ नज़रों से गायब हो गया,,

<अरवाहे सलासा सफ़हा 434.435, हिकायत 440,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

भला जुलाहे की दावत

"मौलाना अहमद हसन साहिब ने इरशाद फरमाया कि जब मैं अव्वल अव्वल मौलाना क़ासिम साहिब की खिद मत मे एक जूलाहा आया और दावत के लिए अर्ज़ किया मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहिब ने मंजूर फरमा लिया यह अमर मुझ को बहुत नागवार हुआ इतना कि जैसे किसी ने गोली मार दी कि भला जुलाहे कि दावत भी मंजूर कर ली,,

<अरवाहे सलासा सफ़हा 292, हिकायत 291,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

तक़वियतुलईमान की इशाअत से लड़ाई का अंदेशा

"खान साहिब (अमीर शाह खान)ने फरमाया कि मौलवी इसमाईल साहिब नि तक़वियतुलईमान अव्वल अरबी में लिखी थी...उस के बाद मौलाना ने उस को उर्दू मे लिखा और लिखने के बाद अपने खास खास लोगों को जमा किया ....और उन के सामने तक़वियतुलईमान पेश की और फरमाया कि मैंने यह किताब लिखी है और मैं जानता हूँ कि इस मे बाज़ जगह ज़रा तेज़ अलफाज भी आगाए हैं और बाज़ जगह तशद्दुद भी हो गया है मसलन उन उमूर को जो शिरके खफी थे शिरके जली लिख दिया गया है इन वुजूह से मुझे अंदेशा है कि इस कि इशाअत से शोरिश ज़रूर होगी..... गो इस से शोरिश होगी मगर तवक़्क़ो है कि लड़ भिड कर खुद ठीक होजाएंगे,, <अरवाहे सलासा सफ़हा 98, हिकायत 59,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

शराब पीने और बे वुज़ू नमाज़ पढ़ने की इजाज़त

"मौलवी मुजफ्फर हुसैन साहिब ...एक मर्तबा आप का जलाल आबाद या शामली गुज़र हुआ एक मस्जिद वेरण पडी थी वहाँ नमाज़ के लिए तशरीफ लाकर पानी खींचा वुज़ू किया मस्जिद मे झाड़ू दी बाद एक शख़स से पूछा कि यहाँ कोई नमाज़ी नही उस ने कहा कि जी सामने खान साहिब का मकान है जो शराबी और रंडी बाज़ हैं अगर वुह नमाज़ पढ़ने लगें तो यहाँ और भी दो चार नमाज़ी हो जाएँ आप उन खान साहिब के पास तशरीफ ले गए तू रंडी पास बैठी थी और नशे मे मस्त थे आप ने खान साहिब से फरमाया कि भाई खान साहिब अगर तुम नमाज पढ़ लिया करो तो दो चार आदमी और जमा हो जाया करें और मस्जिद आबाद हो जाएगी खान साहिब ने कहा कि मेरे से वुज़ू नहीं होती और न यह 2 बुरी आदतें छुटती हैं **आप ने फरमाया बे वुज़ू ही पढ़ लिया करो और शराब भी पी लिया करो.. उस पर उस ने अहद किया कि मैं बगैर वुज़ू ही पढ़ लीआ करूंगा,,** <अरवाहे सलासा सफ़हा 216, हिकायत 191,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

ऐसे ही एक मर्तबा गढ़ी पुख्ता तशरीफ ले गए एक खान साहिब के लिए नमाज़ के लिए कहा उनहों ने कहा मुझे दाढ़ी चढाने कि आदत है और वुज़ू से यह उतर जाती है आप ने फरमाया कि **बे वुज़ू ही पढ़ लिया करो खान साहिब ने कुछ रोज़ बगैर वुज़ू**

नमाज़ पढ़ी फिर खयाल आया कि एक मौलवी के कहने से तो ने बगैर वुज़ू नमाज़ पढ़नी शुरू करदी और अल्लाह व रसूल के हुक्म से बा वुज़ू नमाज़ नही पढ़ी जाती उस के बाद हमेशा बा वुज़ू नमाज़ पढ़ने लगे,,

<अरवाहे सलासा सफ़हा 217, हिकायत 192,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

मौलवी इसमाईल साहिब दिहलवी का रफ़ये यदैन करना और हदीस का न समझना

"शाह इसहाक़ साहिब बयान फरमाते थे कि जब मौलवी इसमाईल साहिब ने रफ़ये यदैन शुरू किया तो मौलवी मुहम्मद अली साहिब व मौलवी अहमद अली साहिब ने जो शाह अब्दुलअज़ीज़ के शागिर्द थे ...शाह साहिब से अर्ज़ किया कि हज़रत मौलवी इसमाईल साहिब ने रफ़ये यदैन शुरू किया है और उस से मुफ़स्दह पैदा होगा आप उन को रोक दीजिये .....जब शाह अब्दुलक़ादिर साहिब आप कि खिदमत मे हाजिर हुए तो आप ने फरमाया कि मियां अब्दुलक़ादिर तुम इस्माईल को समझा देना कि वुह रफ़ये यदैन न किया करें किया फाइदह है खाह मखाह आवाम मे शोरिश पैदा होगी... शाह अब्दुलक़ादिर साहिब ने मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहिब कि मारिफ़त मौलवी इसमाईल साहिब से कहलाया कि तुम रफ़ये यदैन छोड़ दो इससे खाह मखाह फितना होगा जब मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहिब ने मौलवी इसमाईल साहिब से कहा तो उनहों ने जवाब दिया कि अगर अवाम के फितने का खयाल किया जाए तो इस हदीस के किया माना होंगे मन तमससक बिसुन्नती इंद फसादे उम्मती फलहू अजरो मियतो शहीदिन,कियों कि जो कोई सुन्नते मतरूका को इख्तियार करेगा अवाम मे ज़रूर शोरिश होगी मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहिब ने शाह अब्दुलक़ादिर साहिब से जवाब अर्ज़ किया उस को सुन कर शाह अब्दुलक़ादिर साहिब नि फरमाया बाबा हम तो समझे थे कि इसमाईल आलिम होगया मगर वुह तो एक हदीस के माना भी न समझा यह हुक्म तो उस वक़्त है जाबके सुन्नत के मुक़ाबिल खिलफ़े सुन्नत हो और मा नहनू फीह में सुन्नत का मुक़ाबिल खिलफ़े सुन्नत नही बलके दोसरी सुन्नत है कियों कि जिस तरह रफ़ये यदैन सुन्नत है यों ही इरसाल भी सुन्नत है जब मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहिब ने यह जवाब भी

मौलवी इसमाईल साहिब से बयान किया तो वुह खामोश हो गए और कोई जवाब न दिया,,

<अरवाहे सलासा सफ़हा 113,114, हिकायत 73,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

मौलवी इसमाईल साहिब दिहलवी और सय्यद अहमद राए बरेलवी का मुसलमानों और सिक्खों से जिहाद

"मौलवी अब्दुलहइ साहिब लखनवी मौलवी मुहम्मद इसमाईल साहिब दिहलवी और मौलवी मुहम्मद हसन रामपूरी भी और सब हाजरात सय्यद साहिब के हमराह जिहाद मे शरीक थे सय्यद साहिब ने पहला जिहाद यार मुहम्मद खान हाकिमे बागिस्तान सी किया था...... फिर कुछ अरसे बाद कड़क सिंह पिसर रंजीत वालीए लाहौर से लड़ाई हुई जिस मे बहुत से मुजाहिदीन मारे गए हज़रत मौलवी मुहम्मद इसमाईल साहिब व मौलवी मुहम्मद हसन साहिब भी वहीं शहीद हुए अलबत्ता मैदान मुजाहिदीन के हाथ रहा जब लाशें सँभाली गईं तो सय्यद साहिब और उन के साथियों का पता न लगा,,

<अरवाहे सलासा सफ़हा 159,160, हिकायत 121,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

सय्यद अहमद राए बरेलवी साहिब का क़ब्र को ढाना

"सय्यद साहिब को ढूंडते ढूंडते हम एक गाँव मे एक जगह उतरे वहाँ दरयाफ्त करने से मालूम हुआ कि यह क़ब्र जो ढई हुई है उस को सय्यद साहिब अभी ढहवा कर गए हैं,, <अरवाहे सलासा सफ़हा 161, हिकायत 121,कुतुब खाना नईमिया देउबन्द>

भंग पीने की तालीम और उस की बरकत का तावीज़

"एक रोज़ (शाह अब्दुलकादिर साहिब के पास)एक भंग फ़रोश औरत आई और उस ने आकर निहायत समाजत से अर्ज़ किया कि हज़रत मैं मजबूर होगई हूँ और मेरी दुकान नही चलती आप ने उस को एक तावीज़ लिख दिया और फरमाया कि इस को भंग घोटने के लोटे पर बांध देना और फरमाया कि जब तेरी दुकान चल जाए तो मुझे यह तावीज़ वापस दे जाना चूंके आप की खिदमत मे बड़े बड़े लोग जैसे शाह इसहाक़ साहिब मौलवी अब्दुलहई साहिब वगैरहुम बैठे थे इस लिए उन को शाह साहिब के इस फेल से बहुत खलजान हुआ कि शाह साहिब और भंग कि बिकक्री का

तावीज़ ,मगर इस को दिल ही मे रखा और ज़ाहिर नही किया चंद रोज़ के बाद वुह 2भंगियाँ मिठाई की लाई आप ने खिलफ़े मामूल कि हद्‌या न लेते थे भंगियाँ कुबूल फरमा लीं अब तो इन हज़रात का खलजान और तरक़्क़ी कर गया जब वुह औरत चली गयी तो आप ने वुह तावीज़ उन लोगों को दिया और फरमाया की इसे पढ़ लो इस मे किया लिखा है ऊन्हों ने पढ़ा तो उस मे लिखा था कि दिहली के भंग पीने वालों तुम्हारा भंग पीना मुकद्दर हो चुका है तुम और जगाह न पिया करो इसी दुकान पर पीआईआई लिया करो,,<अरवाहे सलासा,सफ़हा ६३>

नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम का देउबन्दी आलिमों का खाना पकाना

'' एक दिन आलहज़रत(हाजी इम्दादुल्लाह) ने ख़्वाब देखा कि आप की भावज आप के मिहमानों का खाना पका रही हैं कि जनाबे रसूले मक़बूल **सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम तशरीफ लाए और आप की भावज से फरमाया कि उठ तो इस काबिल नहीं कि इमददुल्लाह के मिहमानों का खाना पकाए उस के मिहमान उलमा हैं उस के मिहमानो का खाना मैं पकाऊंगा।** ,,

<तजकिरतुर्राशीद, 1/75>

नानौत्वी साहिब गंगोही साहिब की दुल्हन की शक्ल मे

"एक बार इरशाद फ़रमाया मैंने (गंगोही साहिब ने)एक बार ख़्वाब देखा था कि मौलवी मोहम्मद क़ासिम साहब उरूस(दुल्हन)की सूरत में हैं और मेरा उन से निकाह हुआ है, सो जिस तरह ज़न व शौहर में एक को दूसरे से फ़ायदा पहुंचता है इसी तरह मुझे उन से और उन्हें मुझसे फ़ायदा पहुंचा है उन्होंने हज़रत रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ करके हमें मुरीद कराया और हम ने हज़रत से सिफारिश करके उन्हें मुरीद करा दिया, हकीम मोहम्मद सिद्दीक साहिब कांधलवी ने कहा आप ने फरमाया आखिर उनके बच्चों की तरबियत करता ही हूं,,

<तजकिरतुर्राशीद, 2/362>

गन्दे सवाल का गन्दा जवाब

'' एक बार भरे मजमे में हज़रत कि किसी तक़रीर पर एक नौ उम्र दिहाती बेतकल्लुफ़ पूछ बैठा कि हज़रत जी औरत कि शरमगाह कैसी होती है अल्लाह रे

तालीम सब हाज़िरीन ने गर्दनें नीचे झुकालीं मगर आप मुतलक़ चींबजबींना हुए बल्कि बे साखता फरमाया जैसे गेहूं का दाना ,,
<तजकिरतुर्राशीद, 2/131>

मौलवी ज़मीन साहिब की रनडियों से बेहोदा गुफ़्तुगू और रनडी का ज़बरदस्त जवाब

'' एक बार कहा कि ज़ामिन अली जलालाबादी की सहारनपुर में बहुत रनडियां मुरीद थीं एक बार यह सहारनपुर में किसी रनडी के मकान पर ठहरे हुए थे सब मुरीदनियाँ अपने मियां साहब की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुईं मगर एक रनडी नहीं आई मियां साहिब पोले कि फुलानी क्यों नहीं आई रनडियों ने जवाब दिया " मियां साहब हम ने उससे बहुतेरा कहा कि चल मियां साहिब की ज़ियारत को उसने कहा, मैं बहुत गुनहगार हूँ और रोसियाह हूँ मियां साहिब को किया मुंह दिखाऊँ मैं ज़ियारत के क़ाबिल नहीं "मियां साहब ने कहा नहीं जी तुम उसे हमारे पास ज़रूर लाना चुनांचे रनडियां उसे लेकर आईं जब वह सामने आई तो मियां साहब ने पूछा "बी तुम क्यों ना आई थीं?" उसने कहा कहा हज़रत रूसियाही की वजह से ज़ियारत को आती हुई शरमाती हूँ। **मियां साहब बोले "बी शरमाती क्यों हो करने वाला कौन और करने वाला कौन है वह तो वही है "रनडी यह सुनकर आग हो गई और खफा होकर कहा लाहौल व ला कुव्वत अगरचि मैं रूसियाह और गुनहगार हूँ मगर ऐसे पीर के मुंह पर पेशाब भी नहीं करती** "मियां साहब तो शर्मिंदह होकर सरनिगूँ रह गए और वह उठकर चल दी।,, <तजकिरतुर्राशीद, 2/306.307>

राम और कनहिया अच्छे लोग थे

"हज़रत इमाँमे रबबानी ने इरशाद फरमाया कि **राम और कनहिया अच्छे लोग थे** ।,,
<तजकिरतुर्राशीद, 2/359>

गुरू नानक मुसलमान थे

"हज़रत इमाँमे रबबानी ने इरशाद फरमाया इसी तरह अक्सर बुजुर्ग पोशीदह होकर खिलकत को रहे हिदायत पर लाते हैं **इसी तरह बाबा नानक भी मुसलमान थे** और पोशीदह होकर हिदायत करते थे ,,<तजकिरतुर्राशीद, 2/302>

मज़ा ज़िक्र मे कहाँ मज़ा तो मज़ी मे है

"फरमाया कि एक साहिब मुझ से कहने लगे कि ज़िक्र मे मज़ा नहीं आता **मैं ने कहा कि मज़ा तो मज़ी मे है यहाँ कहाँ मज़ा ढूंढते फिरते हो**,,

< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा अव्वल सफ़हा 71, मलफ़ूज न॰93>

मज़ा तो मज़ी मे होता है जो बीबी से मुलाअबत के वक़्त खारिज होती

"एक शख्स ने हज़रत हाजी साहिब से शिकायत की थी कि ज़िक्र करता हों मगर कोई नाफा नहीं मालूम होता फरमाया कि यह किया थोड़ा नाफा है कि ज़िक्र मे लगे हुए हो वाक़ई यह हज़रात हकीम होते हैं कैसी अजीब बात फरमाई,,एक शख्स ने मुझ से कहा कि ज़िक्र मे मज़ा नाही आता मैं ने कहा कि **मज़ा ज़िक्र मे कहाँ मज़ा तो मज़ी मे होता है जो बीबी से मुलाअबत के वक़्त खारिज होती है यहाँ कहाँ मज़ा ढूंढते फिरते हो,,** ,,< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 6 सफ़हा 35, मलफ़ूज न॰42>

(कमलाते अशरफिया मे भी यह वाकिया है कुछ इस तरह)

लोग तो कैफ़ियात के पीछे पड़े हुए हैं और लज़्ज़त के तालिब हैं है तो फुहुश बात मगर मैं तो इस लज़्ज़त कि तलब पर यह कहा करता हूँ कि अगर मज़े ही की ख़ाहिश है तो **मियां मज़ा तो मज़ी मे है बीवी को बगल मे लेकर बैठ जाओ चूमो चाटो मज़ी निकलेगी बहुत मज़ा आएगा**,, (कमलाते अशरफिया 253 सफ़हा 417)

हाजी इमदादुल्लाह साहिब को रहमतुल्लिलआल्मईन कहना

"जिस वक़्त हज़रत गंगोही को हज़रत हाजी साहिब की वफ़ात की खबर मिली है कई रोज़ तक हज़रत मौलाना गंगोही को दस्त आते रहे इस क़दर सदमा और रंज हुआ था बज़ाहीर यह मालूम न था की इस क़दर महब्बत हज़रत के साथ होगी **हज़रत गंगोही हज़रत की निस्बत बार बार रहमतुल्लिलआल्मईन फरमाते थे,,**

< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 1 सफ़हा 125, मलफ़ूज न॰135>

हाफिज़ जी का रात भर रोटी लगा लगा कर खाना

" फरमाया कि लोग बे सोचे समझे जो जी मे आता है एतिराज कर बैठते हैं पहले उस चीज़ की हक़ीक़त समझ लो अगर खुद समझ मे ना आए दूसरे से समझ लो लेकिन फिर भी अगर वुह चीज़ काली न हो बालके हाली हो तो किया इलाज एक

हाफिज़ साहिब की हिकायत है गो फुहुश है मगर तौजीह के लिए काफी मिसाल है वुह है कि शागिर्दों ने कहा हाफिज जी निकाह में बड़ा बड़ा मज़ा है। हाफिज़ जी ने कोशिश करके एक औरत से निकाह कर लिया शब को हाफिज़ जी पहुंचे और रोटी लगा लगा कर खाते रहे भला क्या ख़ाक मज़ा आता सुबह को खफा होते हुए आए कि ससुरे कहते थे कि निकाह में बड़ा मज़ा है हमें तो कुछ मज़ा भी ना आया .लड़के बड़े शरीर होते हैं कहने लगे अजी हाफ़िज़ जी यूं मज़ा नहीं आया करता मारा करते हैं तब मज़ा आता है अगले दिन हाफिज़ जी को खूब ज़ूद कूब की मारे जूतों के बेचारी का बुरा हाल हुआ गुल मचने पर अहले महल्ला ने हाफिज़ जी को बहुत बुरा भला कहा बड़ी रुसवाई हुई सुबह को पहले दिन से भी जियादह ख़फा होते आए और शागिर्दों से शिकायत की उनहों ने कहा कि हाफिज़ जी मारने के यह माना हैं उसके मुआफिक अमल किया तब हाफ़िज़ जी को मालूम हुआ कि वाकई मज़ा है,,
<मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 1 सफ़हा,267,268,, मलफूज़ न॰381>

<u>अवाम की अक़ीदत की गंदी मिसाल</u>

"अवाम का एतिक़ाद है ही किया चीज़,हमारे हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहिब इस एतिक़ाद की एक मिसाल बयान फरमाया करते थे है तो फुहुश मगर है बिलकुल चसपाँ,फरमाया करते थे की **अवाम के अक़ीदे की बिलकुल ऐसी हालत है की जैसे गधे का उजवे मख़सूस बढ़े तो बढ़ता ही चला जाए और जब गायिब हो तो बिलकुल पता ही नहीं** ,वाक़ई अजीब मिसाल है,,
 < मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 3 सफ़हा 292, मलफूज़ न॰408>

<u>जोते को इमाम बनाना</u>

"फरमाया कि बचपन मे ऐसे ऐसे खेल सोझते हैं.....एक रोज़ सब लड़कों और लड़कियों के जोते जमा कर के उन को बराबर रखा और **एक जोते को सब के आगे रखा वुह गोया कि इमाम था और पलंग खड़े कर के उस पर कपड़े कि छत बनाई वुह मस्जिद क़रार** दी यह खेल था,, < मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा 270,मलफूज़ न॰345>

<u>थानवी साहिब का अपने वालिद कि चारपाई बांधना</u>

"एक मर्तबा मेरठ मे ऐसा हुआ कि बारिश के अय्याम थे मगर कभी तरुश्शुह भी होता था बाहर सहन मे लेटा करते थे वालिदा साहिबा का इंतिक़ालहो गया था हम

लोग वालिद साहिब के पास रहते थे तीन चरपाइयाँ बराबर बिछी हुई थीं वालिद साहिब कि और हम दोनों भाइयों की मैं ने रस्सी लेकर सब के पाये मिलाकर खूब कसके बांध दिये और पड़ कर सोगए फिर वालिद साहिब भी आकर लेट गए इत्तिफ़ाक़ से बारिश आई तो वालिद अहिब उठे और हम को भी उठाया बचपन कि नींद थी हूँ हूँ करके फिर सोगए वालिद साहिब जनाये नहीं उठते तो पड़ा रहने दो और अपनी चारपाई घसीटी अब वहाँ तीनों चरपाइयाँ एक साथ चली आरही हैं,,बेहद गुस्सा हुए और फरमाया कि ऐसी ऐसी हरकतें करते हैं अब सब भीग रहे हैं चाक़ू डूंडा इत्तिफ़ाक़ से जल्दी मे रस्सी काटने के लिए चाक़ू भी न मिला आख़िर ख़ुद ही बावर्ची ख़ाने से चाक़ू तलाश करके लाये और उन रास्सिओं को काटा तब वहाँ से चारपाइयाँ उठ सकीं सुभह तो याद नहीं इस हरकत पर कोई चपत लगाया नहीं,,

< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा 270,271, मलफ़ूज़ न॰345>

नमाज़ियों के जूते फेंकना

"फरमाया एक मर्तबा मेरठ मे मियां इलाही बख़्श साहिब मरहूम की कोठी मे जो मस्जिद सब नमाज़ियों के जूते जमा करके शामियाने पर फेंक दिये नमाज़ियों मे गुल मचा कि जूते किया हुए एक शख़्स ने कहा यह लटक रहे हैं मगर किसी ने कुछ नही कहा यह ख़ुदा का फजल था बावुजूद इन हरकतों के अज़ियत किसी ने नहीं पहुंचाई ,,

< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा 271, मलफ़ूज़ न॰345>

मामूं के खाने मे कुत्ते का पिल्ला

"फरमाया कि एक साहिब थे सीकरी के हमारी सौतेली वालिदह के भाई बहुत ही नेक और सादा आदमी थे वालिद साहिब ने उन को ठेके के काम पर रख छोड़ा था एक मर्तबा कमसरेट से गर्मी मे भूके पियासे परेशान घर आए और खाना निकाल कर खाने मे मशगूल होगए घर के सामने बाज़ार है मैं ने सड़क पर से एक कुत्ते का पिल्ला छोटा सा पकड़ कर घराल कर ऊं कि रिकाबी मे रख दिया बेचारे रूटी छोड़ कर खड़े हो गए और कुछ नहीं कहा ,,

< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा 271, मलफ़ूज़ न॰345>

थान्वी साहिब का गलतियों का एतिराफ़

"वालिद साहिब को गुस्सा आता तो भाई को जियादह मारते थे और कोई पोछता तो फरमाते कि सिखलाता यही है हालांकि यह बात वाक़े के खिलाफ होती मैं ख़ुद भी ऐसी हरकतें करता था मगर मशहूर यही था कि यह सिखलाता था ,,

< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा 271,272, मलफ़ूज़ न॰345>

थान्वी साहिब का अपने भाई के सर पर पेशाब करना

"फरमाया मैं एक रोज़ पेशाब कर रहा था भाई साहिब ने आकर मेरे सर पर पेशाब करना शुरू करदिया एक रोज़ ऐसा हुआ कि भाई पेशाब कर रहे थे मैं ने उन के सर पर पेशाब करना शुरू करदिया इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त वालिद साहिब तशरीफ ले आए फरमाया यह किया हरकत है मैं ने अर्ज़ किया एक रोज़ इनहों ने मेरे सर पर पेशाब किया था भाई ने उस का बिलकुल इनकार कर दिया मुख़तसर सी पिटाई हुई इस लेए के मेरा तो दावा ही दावा रह गया था सुबूत कुछ ना था और मेरे फेल का मुशाहदह था,,

< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा,272, मलफ़ूज़ न॰345>

मोमिन जब तक खुद को काफिरे फरन्ग से बदतर ना समझे मोमिन नहीं

"गरज खातिमे के बाद पता लगता है बाक़ी उस से पहले तो मुजद्दिद साहिब के इरशाद पर अमल होना चाहिए उनहों ने फरमाया है कि **मोमिन मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने को काफिरे फरनग से बदतर ना समझे**,,

,< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा,349, मलफ़ूज़ न॰457>

मौलाना नानौत्वी पर फतवा और तजदीदे ईमान

"तहज़ीरुन्नास पर जब मौलाना पर फतवे लगे तो जवाब नही दिया यह फरमाया कि काफिर से मुसलमान होने का तरीका बड़ों से यह सुना है कि कलमा पढ़ने से मुसलमान होजाता है तो मैं कलमा पढ़ता हों ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह,,

,< मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा,272, मलफ़ूज़ न॰345>

मौलाना नानोतवी का आलाहज़रत की तारीफ व ताईद करना

"एक बार हज़रत मौलाना मोहम्मद क़ासिम साहब (नानोतवी) देहली तशरीफ रखते थे। और उनके साथ मौलाना अहमद हसन साहिब अमरोहवी और अमीर शाह खान साहिब भी थे शब को जब सोने के लिए लेटे तो इन दोनों ने अपनी चारपाई जरा अलग को बिछाली, और बातें करने लगे। अमीर शाह खान साहिब ने मौलवी साहिब से कहा कि सुबह की नमाज़ एक बुर्ज वाली मस्जिद में चलकर पढ़ेंगे, सुना है कि वहां के इमाम कुरान शरीफ बहुत अच्छा पढ़ते हैं। मौलवी साहिब ने कहा कि अरे पठान जाहिल (आपस में बेतकल्लुफ़ी बहुत थी) हम उसके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे वह तो हमारे मौलाना (नानोतवी) की तकफीर करता है। मौलाना (नानोतवी) ने सुन लिया और ज़ोर से फरमाया। अहमद हसन मैं तो समझा था तो लिख पढ़ गया है मगर जाहिल ही रहा फिर दूसरों को जाहिल कहता है। अरे क्या क़ासिम की तकफीर से वह क़ाबिले इमामत नहीं रहा मैं तो इससे उनकी दीनदारी का मोतक़िद हो गया। उसने मेरी कोई ऐसी ही बात सुनी होगी जिसकी वजह से मेरी तकफीर वाजिब थी। गो रिवायत गलत पहुंची हो, तो यह रावी पर इल्ज़ाम है। तो उस का सबब दीन ही है अब मैं खुद उसके पीछे नमाज़ पढूंगा। ग़रजैकि सुबह की नमाज मौलाना (नानोतवी) ने उस के पीछे पढ़ी,,

< मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 4 सफ़हा,349, मलफूज़ न॰457>

किताब लिखने कि उजरत मांगना

"एक सिलसलए गुफ़्तुगू मे फरमाया ...... एक शख़स ने ख़त लिखा था कि अहले बातिल कि फुलां किताब का जवाब लिख दो मैं ने जवाब में लिखा कि मुझ को फुर्सत नहीं तुम ख़र्च बर्दाश्त करो तो मैं किसी आलिम से हक़्कुलमिहनत दे कर लिखवादूँ उस पर उस ने लिखा कि ख़ुदा का खौफ करो इस क़दर दीन फ़रोश मत बनो किताबें छाप छाप कर इतना तो रूपिया कमाया और फिर भी क़नाअत नहीं एक किताब लिखने कि दरखास्त कि उस पर भी रूपिया मांगा जाता है,,

< मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 5 सफ़हा,265, मलफूज़ न॰245>

थान्वी साहिब का ख़ुद को लट्ठ कहना

"एक सिल्सिलए गुफ़्तुगू मे फरमाया .....इस वक़्त तरीक़ बे गुबार हो गया है और इन मक्कारों की दुकांदारियाँ फीकी पद गयी हैं अब उन के फंदों मे जाहिलों का भी आना आसान नहीं है और यह सब बरकत इस सफाई की है जिसे लोग तशद्दुद कहते हैं अगर यह तशद्दुद ही हो तब भी इस चौदवीं सदी मे ऐसे ही पीर की ज़रूरत है जैसा कि मैं हों लठ्ठ,,

< मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 5 सफ़हा,280, मलफूज़ न॰260>

सच्चे सूफी कि मिसाल एक घरिस्तन औरत से

"फरमाया कि आज कल इन दुकानदार जुहला सूफियों ने अल्लाह कि मख़लूक़ को गुमराह कर दिया इन की और सच्चे सूफी कि ऐसी मिसाल है गो फुहुश मिसाल है मगर है मुन्तबिक जैसे एक बाज़ारी औरत और एक घरिस्तन सो वुह बाज़ारी औरत कितना सामान करती है लोगों को फँसाने का और क़िस्म क़िस्म के रूप बदलती है नाज़ व अंदाज़ दिखलाती है पाउडर मलती है और शबोरोज इसी फिक्र मे रहती है कि इस को लाओ उस को लाओ ब खिलाफ घरिस्तन के कि एक ही पर इकतिफा किए बैठी है,,

< मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 5 सफ़हा,289, मलफूज़ न॰274>

आदमी पर आदमी

"फरमाया ....एक शख़्स पीराणे कल्यर मे एक औरत को लेकर एक मकान मे मुंह काला कर रहा था इत्तिफ़ाक़ से और भी मुसाफिर आगाए उन को भी ठहरने के लिए मकान की जरूरत थी उस ने उस मकान के अंदर से कुंडी लगा रखी थी उन लोगों ने दस्तक दी तो आप अंदर से कहता है कि मियां यहाँ जगह कहाँ यहाँ तो खुद ही आदमी पर आदमी पड़ा है देख लीजिये कैसा सच्चा आदमी था झूठ नही बोला कैसी जहानत का जवाब है,,

< मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 5 सफ़हा,303, मलफूज़ न॰289>

शरीअत पर अमल करने का मज़ा एक गंदी मिसाल से

"फरमाया कि शरीअते मुक़द्दसा के अहकाम की तालीम पर अमल करने से क़ल्ब के अनदर सुकून और इतमीनान पैदा होता है जो बड़ी दौलत और नेमत है और यह महज़ बयान से समझ मे आना दुश्वार है अमल कर के देखने की चीज़ है लोग तो इस के मुंतज़िर हैं की समझ मे आए तो अमल करें और समझ मे जब आएगा जब अमल करें जैसे एक अंधे हाफिज़ जी की हिकायत है गो फुहुश है मगर तफ़हीम के लिए गवारा की जाती है । मकतब के लड़कों ने हाफिज़ जी को निकाह की तरगीब दी की हाफिज़ जी निकाह कर लो बड़ा मज़ा है। हाफिज जी ने कोशिश कर के निकाह किया और रात भर रोटी लगा लगा कर खाई मज़ा किया ख़ाक आता सुबह को लड़कों पर खफा होते हुए आए कि ससुरे कहते थे कि बड़ा मज़ा है बड़ा मज़ा है हम ने रोटी लगा कर खाई हमें तो न नमकीन मालूम हुई न मीठी न कड़वी.लड़कों ने कहा हाफिज जी मारा करते हैं आई शब हाफिज़ जी ने बेचारी को खूब जूद कोब किया दे जोता दे जोता तमाम मुहल्ला जाग उठा और जमा हो गया और हाफिज़ जी को बुरा भला कहा फिर सुभ को आए और कहने लगे की ससुरों ने दिक़ कर दिया रात हमने मारा भी कुछ भी मज़ा न आया और रुसवाई भी हुई तब लड़कों ने खोल कर हक़ीक़त बयान की कि मारने से यह मुराद है अब जो शब आई तब हाफिज़ जी को हक़ीक़त मुनकशिफ हुई सुबह को जो आए तो मोंछ का एक एक बाल खिल रहा था और खुशी मे भरे हुए थे। तो हज़रत बाज़ काम की हक़ीक़त करने से मालूम होती है। ,, < मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 6 सफ़हा,97.98, मलफूज़ न॰121>

गंदी मिसाल

"बेहया औरत की हया की मिसाल जिस का क़िस्सा यह है कि एक शख्स किसी के मकान पर उसको दरयाफ्त करने आया तो उस की बीवी नई बियाही हुई थी ज़बान से कैसे बोले और बतलाना ज़रूर था इस लिए कहा तो है नही लहंगा उठा कर और मूत कर और उस पर को फांद कर गई जिस से बतलादिया कि दरया पार गया है बस यह शरम कि के मुंह से तो नाही बोली और शरम गाह दिखादी। ,,

<मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 6 सफ़हा,314।315, मलफूज़ न॰425>

शेखज़ादे कि क़ौम बड़ी खबीस है

"एक बार हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहिब ने बसबीले गुफ़्तुगू फरमाया कि यह शेखज़ादे कि क़ौम बड़ी खबीस है एक शख़स ने उसी मजलिस मे कहा कि हज़रत आप भी तो शेखज़ादे हैं बेसाख्ता फरमाया मैं भी खबीस हूँ और मैं यह कहा करता हूँ कि शेख कि क़ौम फितरती होती है ,,

<मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 6 सफ़हा,255, मलफूज़ न०348>

अंग्रेजों को आराम पहुंचाना

"फरमाया कि एक शख़्स ने मुझ से दरयाफ्त किया था अगर तुम्हारी हुकूमत हो जाए तो **अंग्रेजों** के साथ किया बरताओ करो मैं ने कहा महकूम बना कर रखें कियों कि जब खुदा ने हुकूमत दी तो महकूम ही बनाकर रखेंगे मगर साथ ही उस के **निहायत राहत और आराम से रखा जाएगा कि उनहों ने हमें आराम पहुंचाया है ,,**

<मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 6 सफ़हा,73, मलफूज़ न०87>

आ मादा नर आगया

"एक सिलसिलए गुफ़्तुगू में फरमाया कि देउबन्द में एक बड़ा जलसा हुआ था तो उस मे एक रईस साहिब ने कोशिश की थी कि देउबनदीयों और बरेलवीयों मे सुलह हो जाए मैं ने कहा कि हमारी तरफ से तो कोई जंग नहीं वुह नमाज़ पढ़ाते हैं हम पढ़ लेते हैं हम पढ़ाते हैं वुह नाही पढ़ते तो उन को आमादह करो मिज़ाहन **फरमाया कि उन से कहो आ मादा नर आगया** हम से किया कहते हो ,,

<मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 7 सफ़हा,46, मलफूज़ न०66>

देउबन्दी आलिमों का गदर मे शामिल ना होना

"एक मौलवी साहिब जो मुझ से ज़रा बे तकल्लुफ हैं मुझ से कहा कि आप को खबर भी है कि गदर में आप के बुजुर्ग खड़े हुये थे मैं ने कहा कि जी हाँ खबर है और एक बात कि और भी खबर है वुह यह कि बाद मे बैठ भी गए थे तो तुम मांसोख पर अमल करो और मैं नासिख पर आखरी क़ौल और फेल हुज्जत हुआ करता है तो आखिरे फेल अपने बुज़ुर्गों का बैठ जाना ही है ,,

<मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 7 सफ़हा,74, मलफूज़ न०105>

खाया मंडवा हगा बाजरा

"एक शख्स जो यहीं के रहने वाले थे वुह जंगल से घास का बोझ ले कर आए मामों साहिब बैठे हुए थे कहा कि भाई साहिब आज हम ने एक शेर कहा है मगर एक ही मिसरा है सुनो दोस्तो है अजब माजरा आगे तुम ठीक करलो शेर बनादो मामू साहिब ने फरमाया कि बहुत अच्छा मैं शेर बनाता हूँ सुनो दोस्तो है अजब माजरा कि खाया मंडवा हगा बाजरा,,

<मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 7 सफ़हा,97, मलफ़ूज़ न॰138>

मज़ा ज़िक्र मे कहाँ मज़ा तो मज़ी मे है

"फरमाया कि एक शख्स ने मुझ से कहा था कि ज़िक्र मे मज़ा नहीं आता **मैं ने मिज़ाहन कहा कि मज़ा तो मज़ी मे आया करता है यहाँ ज़िक्र मे मज़ा कहाँ ढूंढते फिरते हो**,, < मलफ़ूज़ाते हकीमुलउम्मत,7 सफ़हा 206, मलफूज न॰310>

थानवी साहिब के मामू का गंदा अमल

" मेरे हैदराबादी मामू साहिब गो एक आज़ाद दुरवेश थे लेकिन उन की बातें बड़ी हकीमाना होती थीं.....इस हिफ़ाजते शरीयत का एक वाक़िआ उन्हीं मामू साहब का और याद आया हैदराबाद से अव्वल कानपूर तशरीफ लाये तो चूँकि जले भुने थे उन की बातों से लोग बहुत मुतअस्सिर हुए अब्दुर्रहमान खान साहिब मालिक मतबा निज़ामी भी उन से मिलने आए और उन के हकाइक़ व मआरिफ़ सुन कर बहुत मोतक़िद हुए अर्ज़ किया कि हज़रत वाज फरमाइये ताकि सब मुसलमान मुनतफ़ा हों मामू साहिब ने उस का जवाब अजीब आज़ादाना और रिन्दाना दिया कहा खान साहिब मैं और वाज़ सलाहकार कुजा व मन खराब कुजा

फिर जब जियादह इसरार किया तो कहा कि एक तरह कह सकता हूँ उस का इंतिज़ाम कर दीजिये अब्दुर्रहमान खान साहिब बेचारे मतीन बुजुर्ग थे वुह समझे कि ऐसा तरीक़ा किया होगा कि जिस का इनतिज़ाम ना हो सके यह सुन कर बहुत इशतियाक के साथ पूछा कि हज़रत वुह तरीक़ए खास किया **है मामू साहब बोले कि मैं बिल्कुल नंगा होकर बाजार में से होकर निकलूं इस तरह कि एक शखस तो आगे से मेरे उज़वे तनासुल को पकड़कर खींचे और दूसरा पीछे से उंगली करे साथ में**

लड़कों की फौज हो और वह यह शोर मचाते फिरें भड़वा है रे भड़वा भड़वा है रे भड़वा और उस वक़्त मैं हकाइक़ व मआरिफ़ बयान करूँ. "

< मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 9 सफ़हा,253,, मलफूज़ न॰200>

बस अल्लाह मियां हैं और मैं हूँ अर्श पर वुह हैं और फर्श पर मैं हूँ

"फरमाया कि मेरी तबीअत इतनी आज़ाद है कि मैंने हमेशा अपने आप को दुनिया मे बिलकुल मुनफ़रिद समझा हुआ है कि बस अल्लाह मियां हैं और मैं हूँ अर्श पर वुह हैं और फर्श पर मैं हूँ दुनिया मे और कोई नहीं,,

,< मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 9 सफ़हा,321,, मलफूज़ न॰228>

गंदे खुआब कि मुबारक ताबीर

"एक शख्स ने खुयाब देखा जो कि बड़ा वहशतनाक खुयाब था कि नऊज़ुबिल्लाह वुह कुरान शरीफ पर पेशाब कर रहा है आप ने फरमाया कि यह बहुत मुबारक खुयब है उस कि ताबीर यह है कि इनशाअल्लाह तुम्हारे लड़का पैदा होगा और वुह हाफिज़ होगा ,,

< मलफूज़ाते हकीमुलउम्मत,हिसा 9 सफ़हा,310,, मलफूज़ न॰228>

बैतुलखला जाने की बेहूदा दुआ

"एक साहिब नीयतें बहुत पूछा करते थे उन से कहा (मौलाना इस्माईल दिहलवी ने) कि तुमहें बैतुलखला जाने कि नियत मालूम है मैं बताऊँ या अय्युहन्नफ़र्रक लोटा धर्रक फी मक़ामिलजहर्रक वर्द्दर्क,,<क़िस्सुसलअकाबिर\सफ़हा ४३>

तबलीगी जमाअत के बानी की नानी की पाखाना तबररुक बना लिया

तबलीगी जमाअत के बानी मौलाना इलयास कान्धल्वी साहिब की नानी के बारे मे मौलाना आशिक इलाही मेरठी लिखते हैं कि

"अखीर उम्र मे बसारत और चलने फिरने से माज़ूर हो गयी थीं और मराजुल्मौत मे तीन साल कामिल साहिबे फिराश रहीं मगर ना कलबी व लिसानी ज़िकरुल्लाह मे फरक़ आया और ना सब्र व रज़ा बार क़ज़ा मे कमी लाहिक़ हुई जिस मरीज को ३ साल मरजे इसहाल(मुसलसल दस्त होना)में इस तरह गुज़रे हों कि करवट बदलना भी दुश्वार हो उस के मुतअल्लिक़ यह

खयाल बे मौका न था कि बिस्तर कि बदबू धोबी के यहाँ भी ना जाएगी मगर देखने वालों ने देखा कि गुसल के लिए चारपाई से उतारने पर पोतड़े निकाले गए जो नीचे रख दिये जाते थे तो उन मे बदबू कि जगह खुशबू और ऐसी निराली महक फूटती थी कि एक दूसरे को सुंघाता और हर मर्द व औरत तअज्जुब करता था चुनांचे बगैर धुलवाए उन को तबररुक बना कर रख लिआ गया,,<तज़किरतुलखलील, सफ़हा ११७>

यह थे देऊबन्दी जमाअत के चंद अकाइद और देऊबन्दी तहज़ीब के चंद नमूने | अक़्ल वालों के लेए यही बहुत हैं | अल्लाह हम को मज़हबे अहले सुन्नत मसलके आलाहज़रत पर इस्तिक़ामत अता फरमाए | और हमे अपने हबीब अलैहिस्सलाम की सच्ची महब्बत अता फरमाए |